चाय की आत्म कथा

श्री सतीश कुमार कश्यप
संदेशवाहक

मेरा नाम चाय है । मेरे पिता का नाम पानी तथा माता का नाम चीनी है । मेरे सरंक्षक अंग्रेज हैं । मेरा विवाह दूध नामक सुन्दर युवक से हुआ । मेरे पति शक्तिशाली हैं, उनमें भारतीय शक्ति है । भारतवासी उन्हें प्रेम करते हैं । जब भारतीय मुझे मेरे पति के साथ देखते हैं तो मुझे दिल से चाहते हैं । सभी रस युक्त वस्तुएं मेरे पति के अभाव में नीरस रह जाती हैं । मेरे पति इंसान नही देवता हैं, उन्हे प्रणाम !

जब मेरी माँ जमाई का श्रंगार कर उसका रुप बदलती है तो लोगों के मुँह में पानी आ जाता है । मैं काली हूँ तथा मेरे पति गोरे हैं । वे मुझे बहुत प्यार करते हैं ।

मै लाल काली नारी हूँ फिर भी लोग मुझे चाहते हैं । जब वह मुझे मेरे पति के साथ देखते है तो मेरी ओर खिंचे चले आते हैं । बहुत से लोग तो मुझसे मिले बिना रह ही नहीं सकते । दिन में कई - कई बार मेरे पास खिंचे आते हैं ।

मेरा स्वभाव सरल है । गाँधीजी ने मुझे जहर बताया है परन्तु मैने कभी गाँधी का उपहास नहीं किया । मेरे संरक्षकों के कारण वह मुझसे घृणा करते हैं । जब लोग लालायित होकर मेरे तेज गर्म होने पर भी मेरा रसपान करते हैं तो मैं गुस्से में उनके होठ जला देती हूँ । जब मैं भारत में आई थी तो लोग मुझे नही जानते थे । परन्तु आज मेरी आत्मा ने पूरे भारत पर अधिकार जमा लिया है ।

***